[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3481

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

भारतीय शास्त्रीय संगीत में विभिन्न वैज्ञानिक आयामों का प्रभाव

डॉ. चेतना बनावत
असोसिएट प्रोफेसर, संगीत (गायन)
मुम्बई विद्यापीठ, मुम्बई
कु. अंजलि गिलोत्रा
शोधार्थी (संगीत)
वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली (राज.)

भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा विश्व में प्राचीनतम् तथा अनवरत् विकासशील रही है। यह उस वृक्ष की भांति है, जिसमें ऋतुकालीन प्रभाव के फलस्वरूप कभी पतझड़ तो कभी नवकोपल आते रहे, किन्तु मूल यथावत् ही रहा है। शास्त्रीय संगीत की इस सुदीर्घ परम्परा के दर्शन वैदिक काल में ही हो जाते हैं, किन्तु विभिन्न समकालीन परिवर्तनों ने इसकी दशा व दिशा में परिवर्तन ला दिया है, फलतः संगीत के क्षेत्र में काफी गुणात्मक प्रगति हुई है। आज के युग को विज्ञान के नित नवीन आविष्कारों की देन प्राप्त हो रही है, जिससे हम सभी व्यवहारिक रूप से परिचित ही हैं। इन नवीन वैज्ञानिक सर्जनाओं से हमारा सांगीतिक कला पक्ष भी अछूता नहीं रह सका। आज तकनीकी व प्रौद्योगिकी के विकास से संगीत जगत् को सुदृढ़ आधार मिला है। संगीत की आदि शाखा शास्त्रीय संगीत के संरक्षण, संवर्धन एवं निरन्तर प्रचार–प्रसार में यह तकनीकी जगत् सहायक सिद्ध हुआ है। विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक सांगीतिक वाद्यों, वैज्ञानिक उपकरणों एवं सूचना प्रौद्योगिकी ने शास्त्रीय संगीत के शिक्षण, श्रवण एवं संग्रहण जैसी नवीन सम्भावनाएं भी प्रदान कर शास्त्रीय संगीत को प्रभावित किया एवं इसके संरक्षण–संवर्धन में अहम् भूमिका निभाते हुए इसे चिरस्थायी बनाने में अपना विशेष योगदान भी दे रहे हैं।